कर्म की भूमिका पर एक लघु अध्ययन

सौरभ कुमार , डॉ सुषमा रानी (प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष)
शोधार्थी, विभाग संस्कृत, ग्लोकल विश्वविद्यालय सहारनपुर

सार

सोच में बदलाव शारीरिक परेशानी को जन्म देता है। पशुओं के आक्रमण से शारीरिक कष्ट भी होते हैं। चंद्रमा मन का आधार है। आत्मा का प्रतिनिधित्व सूर्य करता है। सूर्य के साथ संबंध मन के विचारों को कार्यों में बदलने में सक्षम बनाता है। मन ही है विचारों का संग्रह। ये विचार पूर्व जन्मों के संचित कर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं। चूँकि विचारों के पास अपनी कार्यप्रणाली के लिए कोई जीवन–शक्ति (अचेतन) नहीं होती है, इसलिए इसे चौतन्य की आवश्यकता होती है। एक बार जब यह चौतन्य, बुद्धि, चित्त और अहंकार के साथ मिश्रित हो जाता है, जो मन के विभाजन हैं, तो विचार–अनुक्रम को पूरा करते हैं और ज्ञान–इंद्रियों के माध्यम से कर्म–इंद्रियों को एक फिएट देते हैं। मन कर्म की मदद से अपने विचारों को पूरा करता है – इन्द्रियाँ।

मुख्य शब्दः– कर्म, सोच और विचार।

कर्म की भूमिका

कर्म सिद्धांत का यह सिद्धांत ज्योतिष द्वारा प्रबलित है। दीर्घ जीवन, लघु जीवन और मध्य जीवन तीन जीवन काल हैं जो ज्योतिष पाठ्य पुस्तकों में बताए गए हैं। इसी तरह, महारोगी (पुराना पीड़ित), स्वस्थ व्यक्ति, जो अक्सर बीमार पड़ता है, मानसिक विपथन वाला व्यक्ति – रोगों के प्रकट होने का समय, इसका तीव्रता और क्या यह इलाज योग्य या लाइलाज है, ज्योतिष द्वारा समझाया गया है।

यदि किसी व्यक्ति की अल्पायु की मृत्यु होना तय है, तो किसी भी उपचार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उपचार के फलहीन होने की उम्मीद है। यदि मनुष्य के लंबे समय तक जीने की उम्मीद की जाती है, तो उसे भी किसी इलाज की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार, केवल कुछ लोगों की आवश्यकता होती है

उपचार – सभी नहीं – और समाज के पूरे वर्ग को उपचार की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार कर्म सिद्धांत कैसे लागू होता है, यहाँ बताया गया है।

एक बैलगाड़ी निर्माता का उदाहरण दिया जाता है, जिसने एक बैलगाड़ी के लिए साठ साल की वारंटी दी, बशर्ते कि एक विशिष्ट वजन लोड किया गया हो और एक दिन में विशिष्ट दूरी तय की गई हो। एक आदमी ने गाड़ी पर अधिक भार डाला और वह टूट गई।

चरक संहिता 5 में दिए गए उपरोक्त उदाहरण में, निष्कर्ष निकाला जाना है कि यदि कर्म सिद्धांत के अनुसार एक आदमी लंबे जीवन से संपन्न है, तो वर्तमान क्रियाएं) प्रज्ञा अपरथ और इ) अपथ्य आहार/विहार बना सकती हैं यह एक छोटे से जीवन में। इस प्रकार दीर्घ जीवन तभी संभव है जब मनुष्य जीने के लिए नियत है और दीर्घ जीवन के अनुकूल उपयुक्त कर्म करता है।

यदि किसी बीज को 60 दिनों में अंकुरित होना है, तो निम्नलिखित कारक एक साथ मौजूद होने चाहिए) पानी, इ) वायु, ब) धूप, क) अच्छी मिट्टी और खाद। इस प्रकार बीज के अंकुरित होने की प्राकृतिक प्रवृत्ति को उपर्युक्त चार कारकों के समर्थन से ही प्रभावित किया जा सकता है। इसी प्रकार मनुष्य के कर्मों के सहारे ही दीर्घायु को सहारा दिया जा सकता है।

इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र उपायों की पूर्ति के लिए बाधाओं के सामने आने पर उपचारात्मक उपायों का सुझाव देता है। अद्रदा फल (अनिश्चित भाग्य) के लिए ज्योतिष बुराइयों को दूर करने के उपायों को स्वीकार करता है। जो पूर्व जन्म कर्म को कमजोर और निष्फल बनाता है वह परिहार (उपाय) है। जो कर्म सिद्धांत के अभ्यासी हैं उनका कहना है कि संचित कर्म (संचित कर्म) को उपचारात्मक उपायों से दूर किया जा सकता है।

अगंतु या कर्म भविष्य में सक्रिय होने के लिए हमारे वर्तमान प्रयासों से हराया जा सकता है। प्रारब्ध कर्मअनुभव करना होता है।

उदाहरण के लिए मान लें कि एक व्यक्ति कर्म करता है और बाद में बिना फल भोगे मर जाता है। फिर अगले जन्म में पूर्व जन्मों के कर्म प्रसुप्त वासनाओं के रूप में संचरित होते हैं। जब वह वर्तमान जन्म में कर्म करता है तो संचित कर्म का भी फल मिलता है। यह कर्म के नियम के कारण है।

कोई यह प्रश्न करने के लिए इच्छुक हो सकता है कि कर्म सही व्यक्ति से कैसे जुड़ जाता है। इसका उत्तर उदाहरण के रूप में दिया जा सकता है। एक बछड़ा अपनी गाय को पहचानने में सक्षम होता है, भले ही सैकड़ों गाय मौजूद हों। ऐसा इसलिए क्योंकि बछड़े के पास एक इंटरनल मेमोरी होती है, जो गाय का सही पता लगा लेती है और कभी गुमराह नहीं होती। यह आंतरिक कड़ी पिछले कर्मों के बारे में भी सच है। ऊपर चर्चा किए गए विभिन्न प्रकार के कर्मों में से केवल प्रारब्ध कर्म का अनुभव अनिवार्य है। अन्य दो, अर्थात संचिता और अगामी टाइम्स में परिणाम नहीं दे सकते हैं। शब्द प्रारब्ध का अर्थ है ष्वह जो क्रियाशील हो गया है (अर्थात) कर्म जो धनुष से छूटे तीर की तरह क्रियाशील हो गया है। समय वह है जो हमें कर्म की रूपरेखा, उसमें निहित अच्छाई और बुराई को जानने में सक्षम बनाता है, उसके परिणाम और अनुभव का सटीक क्षण। आगमी मुक्त–इच्छा का उप–उत्पाद है। संचिता को चालू होने से पहले ही रोका जा सकता है।

"प्रारब्ध कर्मनाम भोगदेव क्षयः" 6 दृइसका अर्थ है अनुभव से पहले कर्म कभी नष्ट नहीं होता। यह धर्म शास्त्र का नियम है। यह कहावत केवल प्रारब्ध कर्म (ष्प्रकृतम अरबधाम स्व कार्य जननाय इथि प्रारब्धम) पर लागू होती है। ज्योतिष शास्त्र – समय का विज्ञान होने के नाते – किसी को समझने में सक्षम बनाता है

पिछले जन्मों के कर्म जो अदृश्य हैं। यह हमें लाभ और हानि के बारे में भी बताता है, लाभ या हानि जो पिछले जन्मों के कर्मों के कारण प्राप्त हो सकती है।

उपदानकरण कर्म (भौतिक कारण) है। ज्योतिषा निमिथकर्ण (कुशल कारण) है। मटके के उदाहरण में, मिट्टी उपदानकरण है, कुम्हार निमिथकर्ण है। मिट्टी को घड़े में बदलने का कारण कुम्हार है। इसी प्रकार कर्म के फलोत्पादन के लिए भी ज्योतिष कारण है। इसी प्रकार कर्म के फलोत्पादन के लिए भी ज्योतिष कारण है। ज्योतिष पिछले जन्म के अव्यक्त कर्म को वर्तमान के पेटेंट अनुभवों में परिवर्तित करता है। कर्म निर्जीव (अचेतना) है। जब यह जीवन या चेतना (चौतन्य) से जुड़ा होता है तभी यह सक्रिय होता है। तो एक अजन्मा व्यक्ति कर्म के परिणामों का अनुभव नहीं कर सकता। सुप्त कर्म जब इस संसार में जन्म लेने वाले व्यक्ति से जुड़ा होता है तो सुप्त या अव्यक्त कर्म के फल का अनुभव करने के लिए तैयार होता है। ज्योतिषा निमिथकर्ण के रूप में कार्य करती है और इसे कार्यात्मक बनाती है। संसार में उपाधाना और निमिथ दोनों जुड़े हुए हैं, आयुर्वेद में, पूर्व जन्म कर्म के कारण होने वाले मानसिक रोग को समय के साथ अभिव्यक्ति मिलती है। वात, पित्त और कफ उपदानकरण का गठन करते हैं। ऋतुएँ निमिथकर्ण बनाती हैं। आयुर्वेद में भी कहा गया है कि रोग के लिए ऋतुएं भी जिम्मेदार होती हैं।

दुख रोग का पर्याय है। आयुर्वेद रोग का इलाज करता है। दुःख का निवारण ज्योतिषा द्वारा किया जाता है। रूजाति इति रोगः (जिससे दुःख होता है वह रोग है 8)। उसमें आयुर्वेद और ज्योतिष का संगम है – जो एक ही विषय को दो अलग–अलग दृष्टिकोणों से देखते हैं।

आयुर्वेद आठ महारोगों या आठ प्रमुख रोगों से संबंधित है। ये रोग पापों के कारण भी हो सकते हैं। इस प्रकार, पहले के पाप जन्म भी वर्तमान समय में होने वाली बीमारी के कारणों में से एक है। पूर्व जन्मों के कर्म जो मन में (या मन के रूप में) संकल्पों (या विचारों) के रूप में मौजूद होते हैं, गलत विचारों, गलत कार्यों, गलत दिनचर्या और गलत खान–पान के कारण समय के साथ अभिव्यक्ति पाते हैं। बड़ी–बड़ी बीमारियों में तब्दील हो जाते हैं और दुरूख का कारण बन जाते हैं। मूल कारण प्रारब्ध कर्म है। इसे रोका नहीं जा सकता। इसलिए कुछ रोगों के लिए "महा रोग" शब्द का प्रयोग किया जाता है। समय (ज्योतिष) अपने पाठ्यक्रम में, दासों (अवधि) और भुक्तियों (उप–अवधि) के रूप में घटना के समय को इंगित करता है।

ग्रहों की चाल को ध्यान में रखकर पिछले कर्मों का अनुमान लगाया जा सकता है। कर्म सिद्धांत कहता है कि एक बड़ी बीमारी केवल पिछले कर्मों से उत्पन्न हो सकती है। आयुर्वेद में तीन प्रकार के रोग बताए गए हैं

(1) साध्य, (2) आषाढ़, और (3) याप्य।

दृष्टा वह है जिसका होना निश्चित है। आद्रा वह है जो निमिथ के घटित होने की अपेक्षा करता है। किसी विशेष कारक के अभाव में, यह नहीं हो सकता है। दृढर्ध का अर्थ है जो आंशिक रूप से पूरा हो सकता है।

दशा प्रभाव निश्चित हैं। अष्टवर्ग और गोचर अद्रधा हैं। योग का तात्पर्य कठोर कर्म से है। निमित्त के भेद से कर्म के भेद का अनुमान लगाया जा सकता है।

दृढ कर्म में निमिथ भी शामिल है, अत यह निश्चित है। एक ही दिन जन्म लेने वाले कई व्यक्तियों के लिए योग सामान्य होता है। उदाहरण के लिए आइए हम गज केसरी योग पर विचार करें, जो एक अत्यधिक अनुकूल ज्योतिषीय संयोजन है जो प्रसिद्धि, धन और भाग्य को जन्म देता है। यह योग चंद्रमा और बृहस्पति के बीच वर्ग दृष्टि या युति या विरोध के कारण होता है।

किसी विशेष दिन कई व्यक्तियों का जन्म होता है और उन सभी का एक ही ग्रह संयोजन होगा। इस प्रकार इस योग का लग्न से कोई संबंध नहीं है। मान लेते हैं कि ऐसे ही एक व्यक्ति का यह योग है लेकिन लग्न की दृष्टि से प्रतिकूल कारक हैं। तब, संभावना है कि यह योग बिल्कुल भी फलीभूत न हो। इस तर्क से हम स्पष्ट रूप से स्थापित कर सकते हैं कि योग एक अनिश्चित घटना है।

आइए एक उदाहरण के रूप में विचार करें, एक कुंडली जहां शादी, बच्चों के लिए योग हैं और साथ ही अल्पायु (अल्प जीवन) के लिए एक संयोजन है। मान लीजिए लड़का शादी से पहले पंद्रह साल की उम्र में मर जाता है। तब विवाह (विवाह) और संतान (संतान) योगों को निष्फल कहा जा सकता है। इस प्रकार सभी योगों को अनिश्चित कहा जा सकता है।

अनिश्चितता का कारण यह है कि योग एक समय में समग्र ग्रह स्थिति के कारण बनते हैं जो लग्न से असंबद्ध है इसका अर्थ है कि यह पूर्व जन्म कर्म को ध्यान में नहीं रखता है प्रत्येक व्यक्ति का। एक अन्य उदाहरण देने के लिए, एक नीच ग्रह के साथ एक उच्च ग्रह की युति नीभंग राजयोग को जन्म देती है। मेष या तुला राशि में सूर्य और शनि की युति, कर्क या मकर राशि में मंगल और बृहस्पति, कन्या या मीन राशि में शुक्र और बुध की युति उपरोक्त योग के उदाहरण हैं। यहाँ फिर से लग्न से कोई सरोकार नहीं है। फिर से यह खगोल विज्ञान है जो पंच महा पुरुष योग या नभास योग का

निर्णय करता है। ये योग किसी व्यक्ति के संचित या प्रारब्ध कर्म से संबंधित नहीं हैं। राशि चक्र के ग्रहों की चाल एक पैटर्न का अनुसरण करती है जिसे खगोल विज्ञान द्वारा पहले ही समझाया जा चुका है। ज्योतिष शास्त्र में नौ ग्रह प्रमुख कारक हैं। दास और भुक्ति एक निश्चित पैटर्न का पालन करते हैं। इस प्रकार ग्रह गोचर, ग्रह और काल निश्चित हैं। जो निश्चित है वह व्यक्तिगत कर्म का परिणाम नहीं हो सकता है जो एक परिवर्तनशील चीज है। इस प्रकार ज्योतिष के समग्र नियम किसी व्यक्ति के कर्म से नहीं जुड़े हैं।

लेकिन जो लग्न किसी व्यक्ति के इस संसार में प्रवेश का समय होता है वह पूरी तरह से उसके पूर्व जन्म कर्म से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, हम जानते हैं कि बुध और शुक्र लाभकारी हैं। यह ज्योतिष का एक सामान्य नियम है जो व्यक्तिगत कर्म से जुड़ा हुआ नहीं है। यदि उस जातक का जन्म वृश्चिक लग्न में हुआ हो तो उस जातक के लिए बुध और शुक्र क्रियात्मक पापी बन जाते हैं।

लग्न उस समय का बिंदु है जो प्रारब्ध कर्म के कामकाज की शुरुआत को चिह्नित करता है, जिसकी उत्पत्ति किसी व्यक्ति द्वारा उसके पिछले जन्मों में, या पिछले सभी जन्मों में की गई कर्म में होती है। यदि हम कहते हैं कि शनि अशुभ है तो यह केवल एक सामान्य सूक्ति है। शनि का पोर्टफोलियो कब संशोधन के अधीन है

हम लग्न को शुरुआती बिंदु के रूप में लेते हैं। सामान्य बोलचाल में एक अशुभ शनि किसी व्यक्ति के लिए क्रियात्मक लाभकारी भी हो सकता है। इस प्रकार ज्योतिष किसी व्यक्ति के दृष्टिकोण से ग्रह की विशिष्ट गुणवत्ता को इंगित करता है।

ग्रहों के सामान्य प्रभावों को उपरोक्त पांच कारकों को लागू करके व्यक्तिगत कुंडली पर लागू किया जाना चाहिए और इस प्रकार कुछ व्यापक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। ग्रह अपने निहित गुणों से किसी व्यक्ति को सीधे परिणाम नहीं देते हैं। वे राशि, नक्षत्र आदि के कारण संशोधन प्राप्त करते हैं और यह संशोधित परिणाम एक व्यक्ति को अनुभव करना है। उदाहरण के लिए, हम खगोल विज्ञान में सूर्य को कुछ परिणामों का श्रेय देते हैं लेकिन सूर्य व्यक्ति के लिए शुभ या अशुभ हो सकता है।

ग्रह बल (शाद्वर्गों के आधार पर) एक व्यक्ति पर लागू होते हैं, वे किसी ग्रह की सामान्य विशेषताएं नहीं हैं। किसी ग्रह की कुछ विशिष्ट अच्छा या बुरा करने की शक्ति सीधे उसके लिए जिम्मेदार होती है।

राशि चक्र के छह गुना विभाजन में शक्ति। खगोल विज्ञान से इसका कोई संबंध नहीं है। इसका सीधा संबंध ज्योतिष से है।

खगोल विज्ञान का किसी व्यक्ति के अनुभवों से कोई लेना–देना नहीं है। हालाँकि ज्योतिष के माध्यम से की गई भविष्यवाणियों के लिए खगोल विज्ञान आधार बनाता है।

खगोल विज्ञान वह विज्ञान है, जो आकाशीय पिंडों की गति से संबंधित है। ज्योतिष वह विज्ञान है, जो स्थलीय मामलों में खगोल विज्ञान के प्रभाव से संबंधित है।

किसी व्यक्ति के अनुभव दास–भुक्ति पर आधारित होते हैं। यह दशा–भुक्ति एक निश्चित पैटर्न पर आधारित है जो जन्म के समय प्रचलित नक्षत्र से सीधे जुड़ा हुआ है। यह नक्षत्र, जो जन्म के समय से जुड़ा हुआ है, एक व्यक्ति के पूर्व जन्म कर्म से भी जुड़ा हुआ है। इस प्रकार ज्योतिष के माध्यम से व्यक्ति के भविष्य के बारे में भविष्यवाणी की जा सकती है। खगोल विज्ञान, जो ग्रहों की चाल से संबंधित है, का किसी व्यक्ति के पूर्व जन्म कर्म से कोई लेना–देना नहीं है।

निष्कर्ष

लग्न सीधे जन्म स्थान और जन्म के समय से जुड़ा हुआ है। यह खगोल विज्ञान के माध्यम से पता लगाया जा सकता है। नक्षत्र हमें पूर्व पुण्य को जानने में सक्षम बनाता है। इस प्रकार दशा/भुक्ति के

आधार पर परिणाम एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होते हैं। उपादानकरण ज्योतिष है और निमिथाकरण खगोल विज्ञान है। यह हमारा निष्कर्ष है।

संदर्भः –

- ब्रह्म स्मृत्वा आयुषो वेदम प्रजापति मजीग्रहात (अष्टांग हृदयम, च 1, वे 2
- मनसा कल्प्यथे बंधो मोक्षस्थेनैव कल्प्यथे (विवेका चूडामणि, वे 172)
- काल आत्मा दिनकृत – (बृहत् जातक, अध्याय प्, टम 1)
- आत्मामनसासंयुज्यतेमनइंद्रियेन,इन्द्रियाअर्थेन (वराहमिहिर होरासस्त्रम्, पृष्ठ 100)
- राजनोव रवि शितागु (बृहत् जातक, अध्याय 2, टम 1)
- काल सृजति भूतनि कला संहारते प्रजा कला सुपतेषु जाग्रति कलोठी दुराथिक्रमाः (वृद्ध त्रयी, पृष्ठ 391)
- ''यदुपचितम अन्य जन्मनि शुभसुबं तस्य कर्मनाः पक्तिम व्यांचयति शास्त्रम एतत् तमासी द्रव्यनि दीपा एव'' (प्रसना मार्ग, च 1, वे 36)
- शिक्षा व्याकरणम चंदाहो निरुक्तम ज्योतिषम तथा कल्पश्च इथि षडंगानि। वेद याहुर मणिशिन्हा (शब्द कल्पद्रुम, खंड 4, पृष्ठ 501)
- अंगनि वेध चतुर्दश मीमांसा न्याय विस्तार पुराण धर्म शास्त्रम्च्छ विद्याहि एथा चतुर्दशा (वृद्ध त्रयी, पृष्ठ 242)